أَلَمۡ تَرَ إِلَى ٱلَّذِينَ يَزۡعُمُونَ أَنَّهُمۡ ءَامَنُواْ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ وَمَآ
أُنزِلَ مِن قَبۡلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوٓاْ إِلَى ٱلطَّٰغُوتِ وَقَدۡ
أُمِرُوٓاْ أَن يَكۡفُرُواْ بِهِۦ وَيُرِيدُ ٱلشَّيۡطَٰنُ أَن يُضِلَّهُمۡ ضَلَٰلَۢا
بَعِيدًا ٦٠ وَإِذَا قِيلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡاْ إِلَىٰ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ وَإِلَى ٱلرَّسُولِ
رَأَيۡتَ ٱلۡمُنَٰفِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودٗا ٦١ فَكَيۡفَ إِذَآ
أَصَٰبَتۡهُم مُّصِيبَةُۢ بِمَا قَدَّمَتۡ أَيۡدِيهِمۡ ثُمَّ جَآءُوكَ يَحۡلِفُونَ
بِٱللَّهِ إِنۡ أَرَدۡنَآ إِلَّآ إِحۡسَٰنٗا وَتَوۡفِيقًا ٦٢ أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ يَعۡلَمُ
ٱللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمۡ فَأَعۡرِضۡ عَنۡهُمۡ وَعِظۡهُمۡ وَقُل لَّهُمۡ فِيٓ
أَنفُسِهِمۡ قَوۡلَۢا بَلِيغٗا ٦٣ وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ
بِإِذۡنِ ٱللَّهِۚ وَلَوۡ أَنَّهُمۡ إِذ ظَّلَمُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ جَآءُوكَ فَٱسۡتَغۡفَرُواْ
ٱللَّهَ وَٱسۡتَغۡفَرَ لَهُمُ ٱلرَّسُولُ لَوَجَدُواْ ٱللَّهَ تَوَّابٗا رَّحِيمٗا ٦٤ فَلَا
وَرَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيۡنَهُمۡ ثُمَّ لَا
يَجِدُواْ فِيٓ أَنفُسِهِمۡ حَرَجٗا مِّمَّا قَضَيۡتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسۡلِيمٗا ٦٥
وَلَوۡ أَنَّا كَتَبۡنَا عَلَيۡهِمۡ أَنِ ٱقۡتُلُوٓاْ أَنفُسَكُمۡ أَوِ ٱخۡرُجُواْ مِن
دِيَٰرِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٞ مِّنۡهُمۡۖ وَلَوۡ أَنَّهُمۡ فَعَلُواْ مَا
يُوعَظُونَ بِهِۦ لَكَانَ خَيۡرٗا لَّهُمۡ وَأَشَدَّ تَثۡبِيتٗا ٦٦ وَإِذٗا لَّأٓتَيۡنَٰهُم
مِّن لَّدُنَّآ أَجۡرًا عَظِيمٗا ٦٧ وَلَهَدَيۡنَٰهُمۡ صِرَٰطٗا مُّسۡتَقِيمٗا ٦٨
وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ فَأُوْلَٰٓئِكَ مَعَ ٱلَّذِينَ أَنۡعَمَ ٱللَّهُ
عَلَيۡهِم مِّنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ وَٱلصِّدِّيقِينَ وَٱلشُّهَدَآءِ وَٱلصَّٰلِحِينَۚ

وَحَسُنَ أُوْلَٰٓئِكَ رَفِيقًا ﴿٦٩﴾ ذَٰلِكَ ٱلْفَضْلُ مِنَ ٱللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ عَلِيمًا ﴿٧٠﴾

Theme	
Hypocrites' attitude towards the decision of the Prophet. One who disputes the decision of the Prophet is not a believer. Believers will be in excellent company in the hereafter.	नबी करीम ﷺ के फ़ैसले के बारे में मुनाफ़िक़ीन का रवैया। जो शख़्स नबी करीम ﷺ के फ़ैसले से इख़्तिलाफ़ करता है, वह मोमिन नहीं है। आख़िरत में ईमान वालों को बेहतरीन रिफ़ाक़त नसीब होगी।
Tarjumani	
Have you not seen those who claim that they believe in what has been revealed to you and other prophets before you? Yet, they desire that the judgment (in their disputes) be made by Taghoot (Kafir laws Shaitan) though they were commanded to reject them, and Shaitan's wish is to lead them far astray into deep error. When it is said to them: "Come to be judged by the Rasool in accordance with what Allah has revealed," you see that the hypocrites show their utmost hesitation in coming to you. But see how they behave when they get into trouble as a consequence of their own doings? They come to you swearing by Allah that they desired nothing but to promote good and bring about a reconciliation. Allah knows what really is in their hearts; therefore, leave them alone, admonish them, and speak to them	ऐ नबी, तुमने देखा नहीं उन लोगों को जो दावा तो करते हैं कि हम ईमान लाए हैं उस किताब पर जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है और उन किताबों पर जो तुमसे पहले नाज़िल की गई थीं, मगर चाहते ये हैं कि अपने मामलात का फ़ैसला कराने के लिए तागूत की तरफ़ रुजूअ करें, हालाँकि उन्हें तागूत से कुफ़्र करने का हुक्म दिया गया था— शैतान उन्हें भटकाकर राहे-रास्त से बहुत दूर ले जाना चाहता है	और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उस चीज़ की तरफ़ जो अल्लाह ने नाज़िल की है और आओ रसूल की तरफ़ तो इन मुनाफ़िकों को तुम देखते हो कि ये तुम्हारी तरफ़ आने से कतराते हैं	फिर उस वक़्त क्या होता है जब इनके अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत इनपर आ पड़ती है? उस वक़्त ये तुम्हारे पास कसमें खाते हुए आते हैं और कहते हैं कि ख़ुदा की कसम! हम तो सिर्फ़ भलाई चाहते थे और हमारी नीयत तो यह थी कि फरीकैन में किसी तरह मुवाफिकत हो

effectual words which may go deep into their hearts. We did not send any Rasool but to be obeyed by Allah's leave. If they would have come to you when they had wronged themselves to seek Allah's forgiveness and if the Rasool had also asked Allah's forgiveness for them, they would have found Allah Forgiving, Merciful. Nay! O Muhammad by your Rabb - they will never be true believers until they accept you as a judge in their disputes, then they do not find any resentment in their hearts against your verdicts and accept them with complete submission. If We had commanded them to sacrifice their lives or to leave their homes, very few of them would have done it. Yet, if they would have done what they were commanded to do, it would have been better for them; not only would their faith have been strengthened, but We would have given them an extra great reward on Our own and also guided them to the Right Way. Whosoever obeys Allah and the Rasool will be in the company of those whom Allah has blessed the Prophets, the sincere and steadfast affirmers of truth, the martyrs, and the righteous: What excellent companions they will be This is the real grace from Allah and sufficient is Allah's infinite	जाए— अल्लाह जानता है जो कुछ उनके दिलों में है, उनसे तअर्रुज़ मत करो, उन्हें समझाओ और ऐसी नसीहत करो जो उनके दिलों में उतर जाए	(उन्हें बताओ कि) हमने जो रसूल भी भेजा है इसीलिए भेजा है कि इजने-खुदावन्दी की बिना पर उसकी इताअत की जाए	अगर उन्होंने यह तरीका इखतियार किया होता कि जब ये अपने नफ्स पर जुल्म कर बैठे थे तो तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से माफ़ी माँगते, और रसूल भी उनके लिए माफ़ी की दरखास्त करता, तो यकीनन अल्लाह को बख्शनेवाला और रहम करनेवाला पाते	नहीं, ऐ मुहम्मद, तुम्हारे रब की कसम! ये कभी मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि अपने बाहमी इखतिलाफ़ात में ये तुमको फ़ैसला करनेवाला न मान लें, फिर जो कुछ तुम फ़ैसला करो उसपर अपने दिलों में भी कोई तंगी न महसूस करें, बल्कि सर-ब-सर तसलीम कर लें	अगर हमने उन्हें हुक्म दिया होता कि अपने आप को हलाक कर दो या अपने घरों से निकल जाओ तो उनमें से कम ही आदमी इसपर अमल करते	हालाँकि जो नसीहत उन्हें की जाती है अगर ये उसपर अमल करते तो यह उनके लिए ज़्यादा बेहतरी और ज़्यादा साबित-क़दमी का मूजिब होता और जब ये ऐसा करते तो हम उन्हें अपनी तरफ़ से बहुत बड़ा अज्र देते और उन्हें सीधा रास्ता दिखा देते	जो लोग अल्लाह और रसूल की इताअत करेंगे वे उन लोगों के साथ होंगे जिनपर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया है यानी अंबिया और सिद्दिकीन और शुहदा और सालिहीन	कैसे अच्छे हैं ये रफ़ीक जो किसी को मयस्सर आएँ! यह

knowledge.	हक़ीकी फज्ल है जो अल्लाह की तरफ़ से मिलता है और हकीकत जानने के लिए बस अल्लाह ही का इल्म काफ़ी है।
Tafsir	